पाठ्यक्रम विवरण– गैलेक्सी स्कूल में हिंदी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाया जाता है। हिंदी मानक स्तर और उच्च स्तर दोनों ही स्तर पर पढ़ाई जाती है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य भाषा अधिग्रहण क्षमता का विकास करना है। इन भाषा कौशलों को अध्ययन और उपयोग के माध्यम से विकसित किया जाता है। इसके लिए दिन–प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा और साहित्यिक हिंदी का उपयोग किया जाता है। यह सामग्री संस्कृति से संबंधित होती है।

हिंदी बी सामान्य स्तर और उच्च स्तर का लक्ष्य भाषा के अध्ययन के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय सोच विकसित करना है। संस्कृति, विचार और वैश्विक महत्व के मुद्दे विद्यार्थियों में जागरूकता फैलाने के साथ–साथ उनकी सोच को भी विकसित करने में मदद करते हैं।

भाषा बी मानक स्तर और उच्च स्तर –

यह पाठ्यक्रम ऐसे विद्यार्थियों के लिए हैं जिन्हें हिंदी भाषा का पूर्व–ज्ञान हो। अर्थात् उन्होंने पूर्व में हिंदी भाषा पढ़ी हो। यह पाठ्यक्रम विविध मुद्दों एवं भाषा के माध्यम से विद्यार्थियों में बेहतर रूप से संवाद की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की वैचारिक क्षमता को बढ़ाता है।

उद्देश्य (SL) –

- भाषा, संस्कृति और विचारों के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय उदारता का विकास वैश्विक संदर्भ में करना।
- विभिन्न संदर्भ और विविध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विद्यार्थी प्रभावी रूप से संवाद करने में सक्षम बनें।
- विद्यार्थी विविध प्रकार के पाठ एवं आपसी संवाद से विभिन्न संस्कृति के दृष्टिकोण को समझने में सक्षम बनें।
- विद्यार्थी हिंदी भाषा के माध्यम से भारत की संस्कृति से परिचित हो।
- ज्ञान के विविध स्रोतों के संबंध में भाषा के महत्व से परिचित कराना।
- विद्यार्थियों को सीखने एवं जाँच की प्रक्रिया के माध्यम से ऐसे अवसर प्रदान करना जिससे उनकी बौद्धिक क्षमता एवं रचनात्मक कौशल का विकास हो।
- सामान्य स्पष्टता एवं प्रवाहिता के साथ विचार व्यक्त करना।

- संरचना, तर्क आमतौर पर स्पष्ट, सुसंगत और पुष्ट तरीके से व्यक्त किए गए होने चाहिए।
- मौखिक एवं लिखित सामग्री को उचित रूप से समझें और उत्तर दें।
- विद्यार्थियों को ऐसा माहौल उपलब्ध करना जिससे वे भाषा को एक बोझ के रूप में न लेकर खुशनुमा माहौल में अपनी भाषा को समृद्ध करें।

हिंदी का पाठ्यक्रम निम्नलिखित मुख्य विषयों पर आधारित है–

- पहचान
- अनुभव
- मानवीय सरलता
- सामाजिक संरचना
- धरती के प्रति हमारा योगदान

उच्च स्तर

उच्च स्तर के विद्यार्थियों को मानक स्तर के पाठ्यक्रम के अलावा साहित्यिक कृतियाँ पढ़ाई जाएगी।

पाठ्यक्रम की रूपरेखा–

हिंदी बी भाषा के नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार मानक स्तर और उच्च स्तर दोनों के लिए दो भागों में मूल्यांकन होगा–

बाह्य मूल्यांकन–

प्रश्नपत्र – 1 – रचनात्मक लेखन

प्रश्नपत्र – 2 – दो भागों में विभाजित होगा

अ– श्रवण एवं लेखन

ब– अर्थग्रहण एवं लेखन

आंतरिक मूल्यांकन –

मौखिक अभिव्यक्ति पर आधारित

मानक स्तर के लिए पाठ्यक्रम के मुख्य पाँच विषयों पर आधरित चित्र पर मौखिक अभिव्यक्ति होगी।

प्रश्नपत्रों की जानकारी–

स्तर	प्रश्नपत्र	प्रारूप	शब्द–संख्या	अंक विभाजन
मानक स्तर	प्रश्पत्र 1 रचनात्मक लेखन	पाठ्यक्रम में दिए गए 5 विषयों पर आधारित तीन प्रश्न पूछे जाएँगें जिनके नीचे तीन विधाएँ दी जाएँगी। विद्यार्थी किसी एक विधा पर लेखन करेंगे।	250–400 शब्द	भाषा – 12 अंक विषयवस्तु या संदेश – 12 अंक संकल्पनात्मक समझ (पूछे गए प्रारूप और जिस पाठक और श्रोता के लिए लिखा जा रहा है उसकी स्पष्टता) 6 अंक
उच्च स्तर		पाठ्यक्रम में दिए गए 5 विषयों पर आधारित तीन प्रश्न पूछे जाएँगें जिनके नीचे तीन विधाएँ दी जाएँगी। विद्यार्थी किसी एक विधा पर लेखन करेंगे।	450–600 शब्द	भाषा – 12 अंक विषयवस्तु या संदेश – 12 अंक संकल्पनात्मक समझ (पूछे गए प्रारूप और जिस पाठक और श्रोता के लिए लिखा जा रहा है उसकी स्पष्टता) 6 अंक
मानक स्तर	प्रश्नपत्र 2 अ– श्रवण एवं लेखन ब–तीन अपठित गद्यांश पूछे जाएँगे।	क्रमशः श्रवण के तीन अभ्यास होंगे। तथा पाठ्यक्रम में निर्धारित 5 विषयों पर आधारित तीन गद्यांश दिए जाएँगें। जिन पर पूछे गए प्रश्नों को हल करना होगा।		कुल अंक – 30 कुल अंक – 40
उच्च स्तर		उच्च स्तर के विद्यार्थियों को भी क्रमशः श्रवण के तीन अभ्यास होंगे। तथा पाठ्यक्रम में निर्धारित 5 विषयों पर आधारित तीन गद्यांश दिए जाएँगें। जिन पर पूछे गए प्रश्नों को हल करना होगा।		कुल अंक – 30 कुल अंक – 40

मूल्यांकन की रूपरेखा

मानक स्तर	**अंक विभाजन**	**गुणात्मकता (प्रतिशत में)**	**समयावधि**
प्रश्नपत्र – 1 रचनात्मक लेखन अभिव्यक्ति प्रश्नपत्र – 2 श्रवण एवं लेखन अर्थग्रहण एवं लेखन	30 अंक 25 अंक 40 अंक	25 % 50 % (दोनों को मिलकर)	1 घंटा 15 मिनट 45 मिनट 1 घंटा
मौखिक अभिव्यक्ति	30 अंक	25 %	15 मिनट विद्यार्थी को तैयारी (दिए गए चित्र पर) (शिक्षक के साथ स्व–अभिव्यक्ति एवं संवाद
उच्च स्तर	अंक विभाजन	गुणात्मकता (प्रतिशत में)	समयावधि
प्रश्नपत्र – 1 रचनात्मक लेखन अभिव्यक्ति प्रश्नपत्र – 2 श्रवण एवं लेखन अर्थग्रहण एवं लेखन	30 अंक 25 अंक 40 अंक	25 % 50 % (दोनों को मिलकर)	1 घंटा 30 मिनट 1 घंटा 1 घंटा
मौखिक अभिव्यक्ति	30 अंक	25 %	20 मिनट विद्यार्थी को तैयारी (पढ़ाई गई साहित्यिक विधा पर) (शिक्षक के साथ स्व–अभिव्यक्ति एवं संवाद

साहित्य– साहित्य पढ़ने से विद्यार्थियों को अपनी शब्दावली को व्यापक बनाने और उसका उपयोग करने में मदद मिलती है। रचनात्मकता का विकास करने में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। धाराप्रवाह पढ़ना एवं व्याख्यात्मक कौशल को बढ़ावा देना इसका उद्देश्य है।

भाषा– व्याकरणिक संरचनाओं और शब्दावली की प्रस्तुति, स्पष्टीकरण और समीक्षा को पाठ्यक्रम में एकीकृत किया जाना चाहिए। विद्यार्थी सुनने, पढ़ने, लिखने में अपने कौशल को विकसित करने के लिए विभिन्न विषयों का अध्ययन करते हैं।
प्राथमिक भाषा कौशल में निम्नलिखित बातों को समाविष्ट किया गया है।

भाषा– भाषा विषयक बातों जैसे– व्याकरण, वाक्य–रचना आदि को सही ढंग से प्रयुक्त करना।

सांस्कृतिक संपर्क– एक विशिष्ट सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ के लिए उपयुक्त भाषा का चयन करना।

संदेश– विचारों को समझकर उन्हें उचित रूप से प्रेषित करना।

सामग्री– अध्ययन के लिए– समाचार, कहानियाँ, विज्ञापन, कविताएँ, औपचारिक और अनौपचारिक पत्र, नाटक, वाद–विवाद, चर्चा, भाषण, ब्लॉग, समीक्षा, डायरी, साक्षात्कार आदि का सहारा लिया जाएगा।

भाषा कौशल को विकसित करने के लिए सामग्री का चयन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

लेखन– विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार का लेखन कार्य किया जाता है। जो कि इस प्रकार है –

ब्लॉग, भाषण, वाद–विवाद, औपचारिक प्रतिवेदन, समीक्षा, निर्देश, औपचारिक पत्र, ईमेल, साक्षात्कार, विवरणिका, लीफलेट, लेख, समाचार रिपोर्ट आदि।

पठन – विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार का पठन कार्य किया जाता है। मानक स्तर और उच्च स्तर के पठन में कठिनता का स्तर एवं जटिलता का अंतर होता है। पठन के लिए निम्नलिखित कार्यों की पहचान की गई है –

निर्देश, विवरणिका, भाषण, लघु कहानी, परिवार या दोस्तों को पत्र, व्यवसाय पत्र, एकांकी, साक्षात्कार, समीक्षा, विज्ञापन आदि।

प्रश्नों के प्रकार की बात करें तो, बहुविकल्पी, जोड़े मिलाओ, एक–दो वाक्यों में उत्तर, सत्य–असत्य, रिक्त स्थानों की पूर्ति जैसे प्रश्न पूछे जाएँगे।

श्रवण– श्रवण कौशल को विकसित करने के लिए विविध श्रवण सामग्री सुनाई जाएगी। विद्यार्थियों को संवाद, समाचार, फिल्म समीक्षा, लघु फिल्म, वृत्तचित्र आदि सुनाए जाएँगे।

प्रश्नों के प्रकार की बात करें तो, बहुविकल्पी, जोड़े मिलाओ, एक–दो वाक्यों में उत्तर, सत्य–असत्य, रिक्त स्थानों की पूर्ति जैसे प्रश्न पूछे जाएँगे।

अभिव्यक्ति – विभिन्न परिस्थितियों के बीच परस्पर संवाद की स्थिति विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करती है। विद्यार्थियों को यह बताया जाएगा कि विविध परिस्थिति के अनुरूप उपयुक्त भाषा का चयन कैसे करें और सुसंगत तरीके से अपने विचार, प्रस्तुति को प्रभावी रूप से रख सकें। इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को चित्र देकर मौखिक प्रस्तुति, समस्त कक्षा को समूह में बाँटकर चर्चा, वाद–विवाद, प्रस्तुतीकरण, एकांकी में अभिनय आदि अवसर उपलब्ध कराए जाएँगे।

सांस्कृतिक जागरूकता– यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी संस्कृति को बेहतर से समझने में मदद करता है। अतः सामग्री का चयन चाहे वह कोई प्रकरण हो, एकांकी, कहानी जो भी हो उसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से संस्कृति के किसी भी पहलू को छूना आवश्यक है। विद्यार्थियों को यह बतलाया जाता है कि संस्कृति किस प्रकार भाषा को प्रभावित करती है।

अध्ययन–अध्यापन समय– मानक स्तर के विद्यार्थियों के लिए 150 घंटे एवं उच्च स्तर के विद्यार्थियों के लिए 240 घंटे निर्धारित किए गए हैं।

वार्षिक पाठ्यक्रम–

1. पहचान (Indentites)

- जीवनशैली
- स्वास्थ्य और सुख–सुविधा
- धारणा और मान्यताएँ
- उपसंस्कृतियाँ
- भाषा और पहचान

2. अनुभव (Experiernces)

- फुरसत के समय की जाने वाली गतिविधियाँ
- छुट्टियाँ और यात्रा
- दैनिक जीवन से जुड़ी घटनाएँ
- धार्मिक आचार–विचार
- रीतिरिवाज़ एवं परम्पराएँ
- प्रवास या स्थानान्तरण

3. मानवीय सरलता (Human Ingenuity)

- मनोरंजन
- कलात्मक हावभाव
- संचार माध्यम
- तंत्रज्ञान
- वैज्ञानिक नवोन्मेष

4. सामाजिक संरचना (Social Organization)

- सामाजिक संबंध
- समाज
- सामाजिक जुड़ाव

- शिक्षा
- कार्यरत विश्व
- कानून और सुव्यवस्था

5. धरती के प्रति हमारा योगदान (Sharing the planet)

- पर्यावरण
- मानवीय अधिकार
- शांति और संघर्ष
- समानता
- वैश्वीकरण
- नैतिकता
- ग्रामीण एवं शहरी जीवन

साहित्य (Literature) विद्यार्थी साहित्य का आनंद लेकर पढ़े। साहित्य की आलोचना करना हमारा उद्देश्य नहीं है। निम्नलिखित साहित्य कृतियों को पढ़ाया जाएगा।

1– काबुलीवाला
2– दो कलाकार
3– चीफ की दावत
4– बूढ़ी काकी
5– भोलाराम का जीव
6– वापसी
7– बहादुर
8– भटकन
9– प्रायश्चित

इसके अतिरिक्त एक उपन्यास अथवा नाटक पढ़ाया जाएगा। इन सभी कहानियों/उपन्यास आदि में प्रतिवर्ष बदलाव किए जाएँगे।

सीखने का दृष्टिकोण (ATL)– यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को नए दृष्टिकोण, कौशल आदि विकसित करने में मदद करता है। जिसका सीधा संबंध शिक्षार्थी के पार्श्वचित्र (Learner profile) से होता है। मुख्य रूप से सीखने के दृष्टिकोण को मुख्य पाँच भागों में बाँटा गया है।

1. विचार कौशल (Thinking skills)
2. सामाजिक कौशल (Social skills)
3. संचार कौशल (Communication skills)
4. स्व–प्रबंधन कौशल (Self-management skills)
5. अनुसंधान कौशल (Research skills)

इन कौशलों का विकास पाठ्यक्रम के समरूप किया गया है। भाषाई विकास में ये कौशल महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मूल्यांकन के उद्देश्य –

इस पाठ्यक्रम के लिए छह मूल्यांकन उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं। विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के आधार पर मूल्यांकित किया जाएगा।

1– विभिन्न उद्देश्यों के संदर्भ में स्पष्ट एवं प्रभावकारी संप्रेषण।
2– भाषा को समझकर उसका विविध संस्कृति तथा व्यक्तियों के संदर्भ में उचित प्रयोग करना।
3– भाषा का स्पष्ट तथा शुद्ध उच्चारण के साथ तथा विविध कल्पनाओं के साथ स्वयं को अभिव्यक्त करना।
4– विषयानुकूल वर्तमान संकल्पनाओं को पहचानना तथा संगठित करना।
5– विविध माध्यम जैसे– लेखन, श्राव्य, दृश्य–श्राव्य माध्यमों पर आधारित सामग्री को समझकर उसका विश्लेषण करना।
6– साहित्य को समझकर जीवन में उसका उपयोग करना।

मूल्यांकन अवलोकन और समय रेखा –

आंतरिक मूल्यांकन

व्यक्तिगत मौखिक अभिव्यक्ति	–	25%	द्वितीय वर्ष

बाह्य मूल्यांकन

प्रश्नपत्र – 1	(अभिव्यक्ति कौशल)	–	25%	द्वितीय वर्ष
प्रश्नपत्र – 2	(ग्रहण कौशल) श्रवण कौशल पठन कौशल	–	50%	द्वितीय वर्ष

विद्यालीय परीक्षा

लिखित – व्याकरण, गद्यांश, रचनात्मक लेखन
श्रवण – विविध श्राव्य सामग्री

मौखिक – व्यक्तिगत मौखिक अभिव्यक्ति

अकादमिक ईमानदारी और व्यक्तिगत ईमानदारी (Academic Honesty and personal Integrity) – विद्यार्थियों से आशा की जाती हैं कि चे अपना शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक कार्य अपनी पूरी ईमानदारी से करें। विद्यार्थियों को आई.बी एवं विद्यालय की अकादमिक ईमानादारी नीति के बारे में बताया जाएगा। किसी भी मानक की अनदेखी नही की जाएगी। इस कार्य के लिए विद्यार्थियों को समय–समय पर प्रेरित किया जाएगा।